पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 27, अंक 262 अगस्त 2025

आश्वस्त भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश

तमसो मा ज्योतिर्गमय

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 27 अंक 262
अगस्त 2025

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी. ए. सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	हिंदी सजल में गीतिकाव्य के तत्तव	चौखे सिंह शोधार्थी-हिंदी प्रो. सीमा अग्रवाल शोध निर्देशिका-हिंदी	4
3	महावीर रवांल्टा के नाटक,'एक प्रेम कथा का अंत ' का समीक्षात्मक अध्ययन	अंजली शोधार्थी डॉ. बचनलाल सहायक प्राध्यापक	7
4	नातेदारी-व्यवस्था का बदलता स्वरुप (छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के विशेष संदर्भ में)	मुकेश कुमार कामले सहायक प्राध्यापक, शाधार्थी डॉ. प्रीति शर्मा प्रो. एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्री	9
5	प्रगतिवादी विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति :अग्निबीज	डॉ. सचिन कदम	14
6	Exploring Mediating role of Economic Growth in the relationship between Social Sector Expenditure and Tax Revenue in Karnataka	Hemantha M. Research Scholar Dr. S.B. Nari Associate Professor	17
7	A Metaphysical Study of the Garhwal Himalaya within the Yogic Context	Mayank Uniyal Research Scholar	21
8	कथा वाचकन की अनुगूँजें	श्योराज सिंह बेचैन	25

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

हमारा देश भारत, ब्रिटिश साम्राज्य के उदय और अस्त की कहानी से, 15 अगस्त, सन् 1947 को आजाद हुआ। स्वाधीनता–संग्राम में 1857 से भारत की महिलायें भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साझेदार बनी। भारतीय महिलाओं की प्रेरणा स्त्रोत महारानी लक्ष्मीबाई को माना जा सकता है, जिसने ''प्राण दे दूंगी, पर झांसी नहीं दूंगी'' के जय घोष के साथ अपनी मातृभूमि को आजाद करने के लिये स्वाधीनता आंदोलन का सूत्रपात किया। राजाराम मोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बेहराम मलबारी, महात्मा ज्योतिराव फुले और महर्षि कर्वे जैसे समाज सुधारकों के अन्यान्य प्रयासों के बाद इस शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय महिलाओं के लिये प्रगति का नया द्वार खुला। यद्यपि 28 दिसम्बर 1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय इसका लक्ष्य महिलाओं का सहयोग प्राप्त करना नहीं था, फिर भी महिलाएं इसकी सदस्या हो सकती थी। वास्तव में इसके प्रथम अधिवेशन में ए.ओ. ह्यूम ने कहा था कि सभी विचारधाराओं के राजनीतिक सुधारकों को यह कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि राष्ट्र की महिलाओं के बराबरी के सहयोग के बिना देश के राजनीतिक उद्धार के लिये किया जाने वाला उनका श्रम बेकार ही साबित होगा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन सन् 1889 में बम्बई और कलकत्ता की दस महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें स्वर्णकुमारी देवी, कादम्बरी, गांगुली, पंडिता रमाबाई, काशीबाई कानेटकर, शेवंतीबाई त्रिबंक और शान्ताबाई निकंबे शामिल थी। इसके पश्चात् तो जागरुक भारतीय परिवारों की शिक्षित महिलाओं ने कांग्रेस की गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। महिलाओं की उपस्थिति ने वातावरण में एक सकारात्मक बदलाव पैदा किया, महिलाओं का उत्साह बढ़ा और महिलाओं में चेतना एवं जागृति का शंखनाद हुआ। इसके परिणामस्वरूप मताधिकार के मामले में कांग्रेस ने महिलाओं एवं पुरुषों में बराबरी, समानता की बात को स्वीकार किया।

सन् 1905 से 1915 के बीच कांग्रेस ने बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अपना लिया था, जिसमें महिलाओं ने इन नीतियों को लोकप्रिय बनाने में अप्रतिम सहयोग दिया और होम रूल आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में महिलाओं ने अपनी शक्ति को पहचाना और तन–मन–धन से स्वाधीनता के लिये संघर्ष करने में जुट गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि सामाजिक रुढ़ियों और गलत–दूषित परम्पराओं की दीवारें राष्ट्र–प्रेम की शक्ति के आगे चरमरा गई और भारतीय महिलाएं घर की चार दीवारी से बाहर निकल पड़ी और राष्ट्रीय फलक पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगी। गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं ने संगठित होकर प्रदर्शनों व बैठकों में भाग लेना प्रारंभ किया, खादी बेचने लगी तथा घर–घर जाकर स्वेदशी वस्तुओं का प्रचार करने लगी, उन्होंने शराब की दुकानों तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दिया। इन रचनात्मक कार्यक्रमों में मणीबेन पटेल, मिठुबेन पेटिट, उर्मिलादास और राजकुमारी अमृत कौर ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

देश के सभी हिस्सों में महिलाओं ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया। बंगाल में बसंतीदेवी, उर्मिला देवी, हेम प्रभा दास गुप्ता, आलोकदास गुप्ता आदि। कस्तूरबागांधी जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका में दीक्षा ली थी, उन्होंने गुजरात प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्षता की तथा स्वदेशी का प्रचार किया। अपने पुत्र के जेल जाने की खबर सुनकर उन्होंने कहा कि ''मेरे तो सिर्फ दो बेटे जेल गये हैं जबकि भारत माता के 20 हजार पुत्र जेल जा चुके हैं। मेरे दुःखी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

महाराष्ट्र से स्वाधीनता–संग्राम में साझेदारी करने वाली महिलाओं में पंडिता रमाबाई और काशीबाई कानेटकर पहली महिलायें थी जिन्होंने स्वाधीनता–संग्राम में साझेदारी की थी। इसके साथ ही लक्ष्मीबाई तुझे पुणे, अवंतिकाबाई गोखले, पद्मावती होलकर तथा सत्य भामा कुचालकर, जानकीबाई आप्टे, प्रेमाबाई वर्तक, मालिनी बाई सुवंतकर, गोदावरी परूलेकर, अनुताबाई भागवत, लीलाताई और अन्नपूर्णा देशमुख आदि ने अथक प्रयास किये।

वस्तुतः भारतीय समाज के विशिष्ट वर्ग की महिलाओं के साथ ही भारतीय समाज के सभी जातियों वर्गों की महिलाओं ने आगे आकर स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेकर अपनी अपरिमित शक्ति और साहस का परिचय दिया।

– डॉ. तारा परमार

हिंदी सजल में गीतिकाव्य के तत्त्व

प्रथम लेखक–चौखे सिंह
शोधार्थी–हिंदी

अनुरूपी लेखिका–प्रो. सीमा अग्रवाल
शोध निर्देशिका–हिंदी

शोध-पत्र का सारांश

सजल हिंदी गीतिकाव्य की सद्यः प्रवर्तित विधा है जिसके प्रवर्तक महाकवि प्रो. अनिल गहलौत, पी–एच.डी. (हिंदी), मथुरा (उ.प्र.) है। सन् 2016 को 5 सितम्बर को इसकी विधिवत घोषणा हुई थी। आज यह विकास के नए सौपान चूम रही है। राष्ट्रीय स्तर पर इसके 8 सजल समारोह हो चुके हैं। इसका भावपक्ष एवं कलापक्ष अतीव सम्पन्न है। कई हजार की संख्या में आज इससे सजलकार जुड़े हैं। सौ से अधिक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसका भविष्य उज्ज्वल हैं।

हिंदी सजल गीतिकाव्य की सद्यः प्रवर्तित काव्य विधा है। गीतिकाव्य को अनेक समीक्षकों, कवियों एवं समय–2 पर अन्य विद्वानों ने परिभाषित किया है। समालोचक **डॉ. श्याम सुन्दर दास** के अनुसार–''गीतिकाव्य में कवि अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता है उसमें शब्द की साधना के साथ–2 स्वर की भी साधना होती है। भावना सुकोमल होती है और एक–2 पद में पूर्ण होकर समाप्त हो जाती है। कवि उसमें अपने अन्तर्मन को स्पष्टतया दृष्टव्य कर देता है। वह अपने अनुभवों एवं भावनाओं से प्रेरित होकर उनकी भावात्मक अभिव्यक्ति कर देता है।''[1] इसी प्रकार, सुश्री महादेवी वर्मा की दृष्टि में–''सुख–दुख की भावावेशमयी अवस्था को विशेष गिने–चुने शब्दों में चित्रण कर देना ही गीत है। इसमें कोई संदेह नहीं।''[2] यही नहीं, डॉ. रामकुमार वर्मा ने भी कहा है–''गीतिकाव्य की रचना आत्माभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से ही होती है। उसमें विचारों की एकरूपता रहती है।''[3] इन परिभाशाओं से स्पश्ट है कि सफल गीतिकाव्य में चार विशेषताएँ–**आत्माभिव्यक्ति, विचारों की एकरूपता, संगीतात्मकता और संक्षिप्तता होनी आवश्यक हैं।**

'सजल' भी अन्य पद्य–विधाओं की भाँति गीतिकाव्य की महत्वपूर्ण विधा है। अधिक स्पष्ट शब्दों में कहना चाहें तो गीतिकाव्य की भाँति 'सजल' की भी निम्नलिखित विशेषताएँ निर्दिष्ट की जा सकती हैं–

बीजक शब्द :– हिन्दी सजल, एकरूपता, संगीतात्मकता, आत्माभिव्यक्ति ।

1. अन्तर्वृत्ति की प्रधानता–

गीतिकाव्य एक अन्तर्वृत्ति निरूपक काव्य है। इसमें कवि की अन्तर्वृत्तियों, उसके अन्तर्दर्शनों तथा उसके सुख–दुख, राग–द्वेश आदि की सरस अभिव्यक्ति रहती है। यथा –डॉ॰ महेश 'दिवाकर' की 'सजल–9' रचना की ये पंक्तियाँ देखें–

''दर्द भरा आँसू आता है!
जब कोई अपना जाता है।।
बागडोर है प्रभु–चरणों में!
तना हुआ उसका छाता है।।''[4]

वस्तुतः सजलों में अन्तर्वृत्ति की प्रधानता के अनेकशः उद्धरण देख सकते हैं!

2. संगीतात्मकता–

ध्वनि और संगीत का साहित्य और जीवन से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। संगीत में जीवनदायिनी शक्ति होती है। संगीत और लय के अनुरूप ही फल

की प्राप्ति होती है। संगीत का कोई रूप मन को मुग्ध करता है, 'सजल' रचनाओं में पूर्णतया संगीतात्मकता का तत्त्व समाहित रहता है। यथा—**सुश्री कृष्णा राजपूत की 'सजल—1'** रचना की ये पंक्तियाँ देखें—

''मन में उठी तरंग देखिए!
बदला—बदला ढंग देखिए।।
फँसा जाल में तड़प रहा है!
घायल विवश कुरंग देखिए।।''[5]

वस्तुतः 'हिन्दी सजल' में 'संगीतात्मकता' की पूर्ण अभिव्यंजना हुई है।

3. निरपेक्षता-

गीतिकाव्य में एक घटना, एक परिस्थिति, एक अनुभूति की आत्मानुभूति का प्रधान वर्णन रहता है। वह वर्णन अपने में पूर्ण रहता है। लेकिन 'सजल' में सभी पदिक स्वतंत्र रूप में रहते हैं, साथ ही पूर्वा से निरपेक्ष भी! यथा—सजलकार हरवेन्द्र सिंह गौड़

''मन में चाह अनंत देखिए!
उठता प्रश्न ज्वलंत देखिए।।
पश्चिम की है आँधी आयी!
कैसा होगा अन्त देखिए।।''[2]

उपर्युक्त उद्धरणों में सजल के पदिकों में 'निरपेक्षता' का भाव स्पष्टतया देखा जा सकता है।

4. रसात्मकता-

'गीति' शब्द में कथामूलक रोचकता बहुत कम होती है। उसमें किसी भी रस का पूर्ण परिपाक भी नहीं मिलता है।, यही कारण है कि सजलों में रसों का पूर्ण परिपाक नहीं हो पाता है, अपितु किसी न किसी रूप में किसी न किसी रस की विद्यमानता रही है। यथा—**डॉ. महेश 'दिवाकर'** की 'सजल रचना—84' में देश भक्ति की अभिव्यंजना देखें—

''हिन्दी मेरी माता है!
भारत भाग्य विधाता है!
तुम चाहे कुछ भी बोलो!
हिंदी राष्ट्र—सुमाता है।।''[7]

उपर्युक्त उद्धरणों में 'देशभक्ति' और 'वीर रस' की अभिव्यंजना देखने को मिलती है।

5. भावातिरेकता या रागात्मकता की कसावट-

गीतिकाव्य की भाँति 'सजल' में सुकोमल भावनाओं और अनुभूति का प्रचण्ड प्रवेग रहता है। वह प्रवेग ही श्रोता के मन को आप्लावित कर देता है, अतः पूर्ण रस—निष्पत्ति हो ही नहीं सकती। 'सजल' में पूर्ण रस— परिपाक के लिए बहुत कम स्थान रहता है। 'सजल' में सुकोमल और मार्मिक भावनाओं का तूफान न उड़ेले तो वह 'सजल' न रहकर सामान्य मुक्तक रचना भर रह जायेगी। यथा—**डॉ. महेश 'दिवाकर'** की 'सजल रचना—1' में यह स्थल देखें—

''देशद्रोह कितना बड़बोला?
दाग रहा शब्दों का गोला।।
मौनी बाबा चुप दिखते हैं!
करते औचक खड़ा खटोला।।''[8]

उपर्युक्त उद्धरणों में 'भावातिरेकता' या 'रसात्मकता' की कसावट भली—भाँति अनुभूत की जा सकती है।

6. शब्द चयन और चित्राात्मकता-

'सजल' काव्यकार का दायित्व प्रबंधकार से कहीं अधिक होता है। प्रबंधकार को अपनी लम्बी—चौड़ी कहानी के माध्यम से मनमाने ढंग से कहने का अवसर होता है वह सार्थक, औचित्यपूर्ण, लाक्षाणिक, व्यंजनात्मक, प्रतीकात्मक एवं रूपकात्मक शब्दों के प्रयोग से एक—एक शब्द इतिहास को समायोजित कर देता है। अपनी इसी

शब्द चयनकला के सहारे वह छोटी–सी रचना में बहुत बड़ी बातों को कहने में समर्थ होता है। कभी–2 सजलकार को चित्र– विधान कला का भी आश्रय लेना पड़ता है। कुछ उद्धरण देखें–**डॉ. महेश 'दिवाकर' की 'सजल रचना–103'** की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

''भारत में कमल खिलाना है!
यह वैदिक राष्ट्र बनाना है।।
उठो युवाओ! देर करो मत!
दुष्टों से देश बचाना है।।''[9]

उपर्युक्त सजल–'रचनाओं के दोनों उद्धरणों से स्पष्ट है कि सजल विधा में सजलकारों ने अपनी विशिष्ट शब्द योजना की है।

7. समाहित प्रभाव-

'सजल' की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है–सजल में एक समाहित प्रभाव उत्पन्न करना। जिस 'सजल' का समाहित प्रभाव जितना व्यापक और मार्मिक होता है वह 'सजल' उतनी ही सुन्दर मानी जाती है। इसीलिए, सजलकार को सजल की 'कहन' को प्रभावी बनाना होता है। एक उद्धरण देखें! **डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा** 'यायावर' की 'सजल रचना–2' में ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

''धुँआ–धुँआ है या बादल है!
भीतर–बाहर छल ही छल है।।
रेगिस्तान सरीखी आँखें!
भीतर नखलिस्तान सजल है।।''[10]

उपर्युक्त उद्धरणों के माध्यम से हम सजल में 'समाहित प्रभाव' का भली–भाँति अनुभव कर सकते हैं।

8. मार्मिकता-

'मार्मिकता' गीतिकाव्य की भाँति सजल की सबसे प्रमुख विशेषता है। यह 'सजल' का प्राण है। इसके अभाव में 'सजल' काव्य गीति काव्य कहलाने का अधिकारी नहीं रहता है।एक–दो उद्धरण दृष्टव्य हैं। सर्वप्रथम सजलकार ईश्वरी प्रसाद यादव जी की 'सजल रचना–9' की ये पंक्तियाँ देखें–

''आ गया आज कैसा जमाना?
काग मोती चुगे, हंस दाना।।
दीप का दान होता रहेगा।
धर्म पन्ना सरीखा निभाना।।''[11]

वस्तुतः समग्र विवेचन एवं विश्लेषण से स्पष्ट है कि गीतिकाव्य की सद्यः जन्मी 'सजल' विधा में गीतिकाव्य के प्रायः सभी तत्त्वों की यत्र–तत्र सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

प्रथम लेखक–**चौखे सिंह,** शोधार्थी–हिंदी
गोकुलदास हिंदू कन्या महाविद्यालय,
मुरादाबाद (उ.प्र.)
(एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली–232108 (उ.प्र.) मोबा. 6398484659

अनुरूपी लेखिका–प्रो. सीमा अग्रवाल,
पी–एच॰डी॰
शोध निर्देशिका–हिंदी,
गोकुलदास हिंदू कन्या महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)
(एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)

संदर्भ :

1. डॉ॰ गोविन्दशरण त्रिगुणायतः शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग–2, पृ॰ 29–30 (1974)
2. उपरिवत्, पृ॰ 30
3. उपरिवत्, पृ॰ 30
4. सं॰ डॉ॰ महेश 'दिवाकर', सजल दशक–1, पृ॰ 98 (2023)
5. सं॰ डॉ॰ अनिल गहलौत, सजल शतक–8, पृ॰ 23 (2022)
6. सं॰ डॉ॰ महेश 'दिवाकर', सजल दशक–4, पृ॰ 103 (2023)
7. डॉ॰ महेश 'दिवाकर', लोकधारा–5/सजल खण्ड–1, पृ॰ 84 (2021)
8. सं॰ डॉ॰ अनिल गहलौत, सजल शतक–2, पृ॰ 51 (2021)
9. डॉ॰ महेश 'दिवाकर', लोकधारा–6/सजल खण्ड–1, पृ॰ 104 (2022)
10. डॉ॰ अनिल गहलौत, सजल शतक–1, पृ॰ 69 (2021)
11. सं॰ महेश 'दिवाकर', सजल दशक–1, पृ॰ 32 (2023)

महावीर रवांल्टा के नाटक 'एक प्रेम कथा का अंत' का समीक्षात्मक अध्ययन

– **अंजली** शोधार्थी

– **डॉ. बचनलाल,** सहायक प्राध्यापक

सारांश

महावीर रवांल्टा उत्तराखंड के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में रंवाई क्षेत्र की संस्कृति, लोकजीवन और परंपराओं को प्रमुखता से उभारा है। उनका नाटक 'एक प्रेम कथा का अंत' रंवाई की चर्चित लोककथा 'गजू–मलारी' पर आधारित है. यह मौखिक गाथा को यथार्थ और कल्पना के मिश्रण से नाटकीय रूप देता है। नाटक की भाषा हिंदी है, जिसमें आंचलिक रंवाई शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। संवाद छोटे और प्रभावी हैं, जो रंवाई के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं को दर्शाते हैं। इस नाटक का मुख्य उद्देश्य गजू–मलारी की कथा के माध्यम से प्रेम की नई पराकाष्ठा को दिखाना है. यह अध्ययन नाटक की कथावस्तु, पात्र, भाषा शैली, देशकाल और उद्देश्य पर केंद्रित है।

1. कथानक

नाटक की कहानी गजू और मलारी के प्रेम पर आधारित है –

प्रथम दृश्य : गाँव के मेले में ताँदी नृत्य के दौरान सलारी और मलारी की मुलाकात भेड़पालक गजे सिंह (गजू) से होती है. मलारी गजू के आकर्षण से प्रभावित होती है, जबकि गजू मलारी की सुंदरता से मोहित हो जाता है. उनकी जातिगत भिन्नता (गजू हरिजन, मलारी राजपूत) उनके भावी प्रेम संबंध की पृष्ठभूमि बनाती है।

द्वितीय दृश्य : मलारी के माता–पिता उसकी शादी की चिंता में हैं, उसकी माँ को गजू और मलारी के बीच संभावित प्रेम संबंध की चिंता सताती है, जिसे सौदांण (पिता) बचपन का खेल मानकर टाल देते हैं।

तृतीय दृश्य : मलारी अपनी बहन सलारी से गजू के प्रति अपने प्रेम का इजहार करती है और अपनी सौतन के रूप में गजू की भेड़ों का जिक्र करती है, क्योंकि गजू भेड़ों के साथ अक्सर दूर चला जाता है ।

2. प्रणय

गजू और मलारी का प्रेम गहरा होता है, लेकिन सामाजिक बाधाएँ उनके सामने आती हैं।

प्रथम दृश्यः मलारी चोरी–छिपे गजू से मिलने आती है । वे अपने प्रेम और सामाजिक विरोध की चर्चा करते हैं। गजू को भेड़ चराने मानेरा जाना है, और मलारी उसे लौटते समय ब्रह्मकमल लाने को कहती है ।

द्वितीय दृश्य : मलारी शादी के बाद भी गजू से मिलने आती है, जहाँ वे अपने दुख साझा करते हैं।

तृतीय दृश्य : गजू एक सपने में मलारी को बीमार देखता है और व्याकुल हो जाता है। उसके साथी लुदरू और बालमू उसे गाँव जाकर मलारी से मिलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

चतुर्थ दृश्य : गाँव की महिलाएँ (बिमलुड़ी, नैणा, नाचुडी, सुंदला) गजू और मलारी के प्रेम संबंध पर चर्चा करती हैं। वे सौदांण की मान–मर्यादा की चिंता करती हैं और नैणा सौदांण की पत्नी को सूचना देने का फैसला करती है।

पंचम दृश्य : नैणा सौदांण की पत्नी को गजू और मलारी के प्रेम की जानकारी देती है, जिससे वह चिंतित हो जाती है और अपनी बेटी के भविष्य को लेकर असमंजस में पड़ जाती है. वह मलारी के पिता को सब कुछ बताने का निर्णय लेती है।

3. परिणति

प्रेम कहानी का दुखद अंत होता है–

प्रथम दृश्यः सौदांण को मलारी के प्रेम संबंध का पता चलता है और वह अपनी बेटी पर गुस्सा होता है। वह मलारी को घर से बाहर निकलने से मना कर देता है और उसे गजू को भूल जाने को कहता है । मलारी खाना–पीना छोड़ देती है और बीमार पड़ जाती है।

द्वितीय दृश्य : मलारी अपनी आखिरी इच्छा के रूप में गजू से मिलने की जिद करती है। सौदांण अपनी हठ छोड़कर गजू को बुलाने की अनुमति देता है । मलारी अपने माता–पिता को धन्यवाद देती है और जीवन के प्रति अपनी आशा खो देती है।

तृतीय दृश्य : गजू को मलारी की बीमारी का पता चलता है और वह उससे मिलने के लिए दौणी गाँव की ओर दौड़ता है। रास्ते में उसे नैणा मिलती है, जो उसे बताती है कि मलारी की जिद के आगे सौदांण को झुकना पड़ा है।

चतुर्थ दृश्य : गजू मलारी से मिलने आता है. मलारी उसे बताती है कि उसमें जीने की आस नहीं बची है। वह गजू को मरने के बाद भी प्यार करने का वचन देती है और अंततः प्राण त्याग देती है। गजू मलारी की प्रतिमा बनाने और उसका अंतिम संस्कार करने का वचन देता है ।

4. पात्र एवं चरित्र–चित्रण

नाटक के प्रमुख पात्र मलारी, गजू, सौदांण और सौदांण की पत्नी हैं–

गजू : भीतरी गाँव का भेड़पालक, मलारी का आदर्श प्रेमी, संगीत प्रेमी और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी है। अपनी निम्न जाति के कारण सामाजिक परंपराओं के सामने विवश है।

मलारी : दौणी गाँव के सौदांण की बड़ी बेटी, नाटक की नायिका और गजू की प्रेमिका है। वह अत्यंत सुंदर, लेकिन विवाह के बाद भी अपने प्रेम के लिए संघर्ष करती है और अंत में प्राण त्याग देती है। वह हठी स्वभाव की भी है।

सौदांण : मलारी का अहंकारी और हठी पिता है, जो अपनी मान–मर्यादा के लिए बेटी के प्रेम को स्वीकार नहीं करता, लेकिन अंत में उसकी बीमारी से पिघल जाता है. वह प्राचीन परंपराओं का समर्थक है।

सलारी : मलारी की छोटी बहन ।

सौदांण की पत्नी : सलारी और मलारी की माँ, जो अपनी बेटियों के भविष्य को लेकर चिंतित रहती है।

अन्य पात्र : रघु, लुदरू, बालमू (भेड़पालक) और नैणा, सुंदला, बिमलुड़ी, नाचुड़ी (गाँव की महिलाएँ).

5. संवाद कला

नाटक के संवाद स्वाभाविक, संक्षिप्त, चरित्र–चित्रण में सहायक और मर्मस्पर्शी हैं। वे अवसरानुकूल हैं और पहाडी आंचलिक शब्दों का प्रयोग भाषा को जीवंत बनाता है।

6. भाषा शैली

नाटक की भाषा सरल, सीधी और पात्रों के अनुरूप है। इसमें पहाड़ी अंचल के शब्दों का प्रयोग भाषा को सहज और प्रभावी बनाता है. भावात्मक और संवादात्मक शैलियाँ नाटक को गति और गहराई प्रदान करती हैं ।

7. देशकाल एवं वातावरण

नाटक में गढ़वाल के रंवाई क्षेत्र का विश्वसनीय वातावरण प्रस्तुत किया गया है. पात्रों की वेशभूषा, बोली, और मानसिक स्थिति उस अंचल की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का सफल चित्रण करती है. यह वातावरण नाटक को यथार्थवादी बनाता है।

8. उद्देश्य

नाटक का मुख्य उद्देश्य 'गजू– मलारी' लोककथा के माध्यम से प्रेम की नई पराकाष्ठा को दर्शाना और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव स्थापित करना है । यह मौखिक गाथाओं को साहित्यिक रूप देने का एक सफल प्रयास है।

9. रंगतत्व

'एक प्रेम कथा का अंत' एक सफल नाटक है, जिसे मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके कार्य, पात्रों, संवादों और वातावरण में रंगमंचीय तत्वों का ध्यान रखा गया है, जो पूर्ण मनोरंजन के साथ लोक संस्कृति और लोक जीवन की स्पष्ट झलक देते हैं।

10. शीर्षक की सार्थकता

नाटक का शीर्षक 'एक प्रेम कथा का अंत' सार्थक

है, क्योंकि यह गजू और मलारी के प्रेम की दुखद परिणति को दर्शाता है. यह विलियम शेक्सपियर के **रोमियो और जूलियट** जैसी अमर प्रेम कहानियों की याद दिलाता है, जहाँ नियति प्रेमियों को एक होने नहीं देती।

– 'अंजली' शोधार्थी
कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल
पता– 87 / 5ए, आदर्श विहार सिंगल मण्डी 3rd फेस
प्रथम, कारगी चौक देहरादून– 248001
मोबाईल – 8755718843

– डॉ. बचन लाल
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग
एस.एस.जे.वि.वि., अल्मोड़ा

संदर्भ :

1. रवांल्टा, महावीर सफेद घोड़े का सवार. झारीसन प्रेस एंड पब्लिकेशन्स ।
2. रवांल्टा, महावीर. (2018) एक प्रेम कथा का अंत समय साक्ष्य देहरादून ।
3. उपाध्याय, आचार्य बलदेव संस्कृत साहित्य का इतिहास।
4. भरतमुनि. नाट्यशास्त्र ।
5. डॉ. नागेंद्र, एवं डॉ. हरदयाल हिंदी साहित्य का इतिहास ।
6. गोयल, विमलेश. हिंदी गद्य – साहित्य का इतिहास ।
7. शर्मा, डॉ. रामानंद. भारतीय काव्यशास्त्र ।
8. हेमचंद्र, एवं शर्मा, डॉ. रामानंद. काव्यानुशासन ।
9. वाजपेयी, आचार्य नंददुलारे साहित्य विवेचन ।
10. तिवारी, डॉ. रामचंद्र, एवं तिवारी, डॉ. प्रेमव्रत. हिंदी का गद्य साहित्य।
11. शर्मा, डॉ. रामानंद. (2016) भारतीय काव्यशास्त्र. लोक वाणी संस्थान, दिल्ली।
12. गुलाबराय, बाबू. अग्रवाल, लक्ष्मी नारायण (2015) हिंदी साहित्य का सुबोध साहित्य ।

नातेदारी–व्यवस्था का बदलता स्वरूप

(छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के विशेष संदर्भ में)

– मुकेश कुमार कामले[1]
सहायक प्राध्यापक, शोधार्थी
– डॉ. प्रीति शर्मा
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र

सारांश :– नातेदारी–व्यवस्था किसी भी समाज के सामाजिक सांस्कृतिक दशाओं का आईना होता है मानव समाज के उद्भव के साथ ही साथ समाज के व्यवस्थित संचालन में नातेदारी सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में भूमिका निभाता रहा है क्योंकि नातेदारी के माध्यम से व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक हितों की पूर्ति तो होती ही है उनके संपूर्ण समाजीकरण में भी मदद मिलती है। यद्यपि प्रत्येक समय और स्थान पर परिवार में रिश्तेदारों के बीच थोड़ी बहुत आपसी मनमुटाव होना स्वभाविक है किन्तु यह मनमुटाव जब तनाव और हिंसा का रूप ले ले तो यह चिंता का विषय बन जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र मे शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले में पिछले एक वर्ष के अंदर अनेक पारिवारिक हिंसा के प्रकरण देखने में आये हैं का गहन अध्ययन किया है। शोधार्थी ने अपने शोध से पारिवारिक हिंसा के कारणों एवं उनके परिणामों को जानने का प्रयास किया है जिसके लिए वह इलेक्ट्रानिक मीडिया का अवलोकन एवं प्रिंट मीडिया का अध्ययन कर अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया और अध्ययन पद्धति के लिए जिला जेल कबीरधाम का भ्रमण कर विषय से संबंधित 05 विचाराधीन बंदी का व्यक्तिक अध्ययन किया ।

कीवर्ड–महुआ, टंगिया,कुल्हाडी, दहेज, ब्लेड।

प्रस्तावना :– सामान्य तौर पर प्रत्येक व्यक्ति समाज में किसी ना किसी अन्य व्यक्ति से रक्त या मान्यता प्राप्त संबंधों से बंधे होते हैं संबंधित व्यक्ति को उस व्यक्ति का नातेदार या रिश्तेदार के नाम से जाना जाता है। यह व्यवस्था नातेदारी व्यवस्था कहलाती है।

रेडक्लिफ ब्राउन :– 'नातेदारी प्रथा वह व्यवस्था है, जो व्यक्तियों को व्यवस्थित सामाजिक जीवन मे परस्पर सहयोग करने की प्रेरणा देता है।

मानव जीवन मे नातेदारी का अत्यंत ही महत्व है, नातेदारी के माध्यम से व्यक्ति अपनी विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आवश्यकताओं कि पूर्ति करता है । वैश्विक स्तर पर यदि भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंदर नातेदारी व्यवस्था के भूमिका की बात करें तो भारतीय समाज पारंपरिक समाज होने के कारण नातेदारी का अत्यंत महत्व है। क्योंकि यहां व्यक्ति के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक निर्धारित 16 संस्कारों का निर्वहन एवं संपादन विभिन्न नातेदार – रिश्तेदार द्वारा किया जाता है । परंतु बदलते परिवेश में वैश्विक समाज में बदलाव के साथ परंपरागत भारतीय समाज के नातेदारी व्यवस्था में भी व्यापक बदलाव देखने को मिल रहा है।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के नातेदारी व्यवस्था मे आये बदलाव का अध्ययन किया गया है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

1. सुकृष्ण, विवेक (2019) परिवार का बदलता स्वरूप समस्याएं एवं चुनौतियां का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन में पाया कि आज एकांगी परिवार होने के कारण मूल्य शिक्षा जो बचपन का अमूल्य हिस्सा होता था आज बच्चों की दिनचर्या से गायब हो गया जिसका स्थान आधुनिक टेक्नालाजी ने ले लिया है ।

2. कुमारी, सुमन (2020) संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रकृति के अपने अध्ययन में परिवार के कार्यों एवं भूमिकाओं में परिवर्तन मुख्यत: समाज में तथा सामाजिक मानदण्डों व मूल्यों के परिवर्तन के कारण होता है ।

3. पाठक, डॉ. दीपा (2021) कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक जीवन में समायोजन एवं तनाव का तुलनात्मक अध्ययन के अपने अध्ययन में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक जीवन के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही होता। दोनो के समायोजन मे समानता पायी गई। कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक जीवन मे तनाव मे सार्थक अंतर है । दोनो के तनाव मे सार्थक अंतर है ।

4. पाल, मौसमी (2023) कामकाजी महिलाएं और तनाव प्रबंधन अध्ययन मे पाया कि महिलाएं जब एक साथ दो भूमिका निभाती है तो वह अक्सर खुद को एक चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना करती हुई पाती है।

5. रेखा (2024) भारतीय कामकाजी महिलाओं के जीवन में तनाव, कारण एवं उपाय का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पाया कि ज्यादातर कार्यरत महिलाएं तनावग्रस्त अपनी सोच के कारण ही होती है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

❒ अध्ययन क्षेत्र में नातेदारी व्यवस्था मे पिछले कुछ वर्ष मे आये बदलाव का वर्णनात्मक विश्लेपण करना ।

❒ अध्ययन क्षेत्र के नातेदारी व्यवस्था में आये बदलाव के कारणों एवं परिणामों का विश्लेषण करना एवं उनके निराकरण के सुझाव प्रस्तुत करना ।

अध्ययन का महत्व :–

❒ अध्ययन से नातेदारी व्यवस्था बदलाव को समझने मे मदद मिलेगी ।

❒ अध्ययन से पारिवारिक संघर्ष के कारणों एवं परिणामों को जानने में मदद मिलेगी ।

❒ अध्ययन से पारिवारिक तनाव को दूर करने के सुझाव प्रस्तुत किये जा सकेंगे ।

शोध पद्धति :

किसी भी विषय मे शोध के लिए तथ्यों की आवश्यकता होती है, बिना तथ्य या आंकड़ों के शोध संभव नही है, और तथ्य या आंकड़ों के संकलन के लिए किसी न किसी प्रविधि तथा उपकरण की आवश्यकता होती है। उपकरण एवं प्रविधियों की सहायता से आंकड़ों को सुनियोजित तरीके से एकत्रित कर शोध या अनुसंधान कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कराया जाता है।

प्रस्तुत शोध में अध्ययन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा अध्ययन पद्धति को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है

1. अध्ययन क्षेत्र का परिचय।

2. आंकड़ों के संकलन प्रविधि तथा उपकरण।

3. प्राप्त आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण।

1. अध्ययन क्षेत्र का परिचय : कबीरधाम जिला छत्तीसगढ़ राज्य का एक धार्मिक, सांस्कृतिक जिला है। जिले में स्थित भोरमदेव का मंदिर अपने पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक वैभव के लिए पूरे भारत भर में विख्यात है। इसे छत्तीसगढ़ के खजुराहो के नाम से भी जाना जाता है। जिले का मुख्यालय शहर कवर्धा सकरी नदी के किनारे बसा है। जिले के अंदर गन्ना एक प्रमुख व्यापारिक फसल है। गन्ना फसल की अत्यधिक पैदावार के कारण जिले के अंदर सरकार द्वारा दो शक्कर कारखाना स्थापित किया गया है ।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से जिले का गठन 2 जुलाई 1998 को राजनांदगांव और बिलासपुर जिले को काटकर किया गया। जिले के अंदर ब्लॉक की संख्या चार है, जिसके अंतर्गत कुल 468 ग्राम पंचायत आती है। द्यवर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर जिले की कुल जनसंख्या 8.22 लाख है जिसमे पुरूष की आबादी 412058 एवं महिला आबादी 410468 है। किन्तु जिला योजना एवं सांख्यिकी विभाग के अनुमान के अनुसार वर्ष 2021 में जिले की आबादी 10.36 लाख पहुंचने का अनुमान है। जिले की साक्षरता दर 60.85 प्रतिशत है। इसी प्रकार जिले में 2011 जनगणना के आधार पर जिले की कुल आबादी का 10.63 प्रतिशत शहरी क्षेत्र में निवास करती है तथा 89.37 प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है।

2. आंकड़ों का संकलन की प्रविधि तथा उपकरण :– शोध से संबंधित तथ्यों के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही स्त्रोतों का प्रयोग किया गया –

A प्राथमिक स्त्रोत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा जिला जेल कबीरधाम का भ्रमण कर चुनी हुई प्रतिनिधि इकाइयों में से 05 उत्तरदाता का व्यक्तिक अध्ययन किया गया।

B. **द्वितीयक स्त्रोत** :– द्वितीयक समंको के संकलन हेतु पुस्तक, पत्र–पत्रिकाओं, इंटरनेट, शोधपत्र, रिपोर्ट से प्राप्त आंकड़ों तथा जिला पुलिस कबीरधाम के दस्तावेज का अध्ययन किया किया गया ।

व्यक्तिक अध्ययन :–

केस – 1 (2024)

● ग्राम तेलियापानी थाना कुकदुर में आरोपी खेलन सिंह धुर्वे द्वारा अपनी पत्नी को रात्रि में मामा के साथ आपत्तिजनक स्थिति मे पाये जाने से अपनी पत्नी एवं मामा के साथ मारपीट किया तो उसका मामा डर से भग गया। आरोपी इसी बात को लेकर अपने भाई के घर से वापस आया और अपनी पत्नी को चरित्र शंका के आधार पर सरई लकड़ी के चिरान से सिर,गला और चेहरे पर मारपीट कर गंभीर चोट पहुंचा कर हत्या कर दिया। आरोपी के खिलाफ कुकदूर थाना मे असल अपराध क्रमांक 104/24 धारा 103 (1) भा.न्या. स. का अपराध पंजीबद्ध किया जाकर जेल भेज दिया गया है ।

केस –2

● ग्राम कबीरपथरा थाना चिल्फी मे आरोपी अकलू बैगा का रविवार की रात्रि में पत्नी समारीन बैगा के साथ झगड़ा हुआ। अगले दिन अकलू बैगा और समारीन बैगा दोनो घर मे नही दिखे। खोजबीन की गई खोजबीन से समारीन बैगा का कपड़ा मिला, शरीर नहीं मिला सूचना तस्दीक कार्यवाही हेतु चिल्फी थाना पुलिस द्वारा ग्राम कबीरपथरा जाकर परिजनो के साथ पव का खोजबीन किया गया तो समारीन बैगा मृत शरीर अकलू बैगा के बाड़ी क पास झोरी नाला में मिला। पुलिस पुछताछ मे आरोपी ने बताया कि रात को महुआ पीने के नाम पर लड़ाई झगड़ा हुथा था जिसके कारण आरोपी ने गुस्से मे आकर पत्नी की हत्या कर दिया। आरोपी इसके पहले भी अपनी पहली पत्नी की हत्या कर चुका है जिसके लिए उक्त आरोपी पहले भी 4 वर्ष का जेल काटकर आ चुका है।

केस – 3

● ग्राम सोढ़ा थाना पांडातराई मे रामानुज पाली और उसकी माँ सुखबतीं पत्नी को पसंद नही करता था और

दहेज की मांग करता था एक दिन कांदी लूने गई पत्नी के पीछे–पीछे पति और सास गये और कांदी बांधने के रस्सी से गला मे फंसाकर हत्या कर दिये । पुलिस पूछताछ में पति और सास ने अपना–अपना जुर्म स्वीकार किया।

केस – 4

- थाना कुण्डा मे आरोपी पिता शराबी था और बच्चों के बार – बार शराब सेवन को मना करने को लेकर अकसर झगड़ा होता था। एक दिन आरोपी पिता ने पुत्री की धारदार हथियार से गला रेतकर हत्या किया एवं पुत्र का गला दबाकर हत्या कर दिया । मामले मे आरोपी ने पुलिस को बताया कि कि रात को अपनी लड़की मनीपा को टंगिया से तीन चार बार मारा और घर का कुण्डी बंद कर दिया और अपने 6 वर्षीय बेटे बलराम का रस्सी से गला घोटकर हत्या कर दिया एवं स्वयं जहर खा लिया था ।

केस – 5

- थाना सिटी कोतवाली के अंतर्गत मामला रामनगर क्षेत्र का है जिसमे पति शकर भट्ट और पत्नी विमला भट्ट के बीच अक्सर वाद–विवाद होता था सोमवार रात भी दोनो के बीच खुब झगड़ा हुआ जिसकी आवाज पड़ोसियों ने भी सुनी। सुबह पत्नी की खून से सनी लाश घर मे मिली और पति घायल अवस्था में मिला।

3.प्राप्त आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :–

➤ **कबीरधाम जिले में पंजीबद्ध अपराधों से संबंधित आंकड़े :–**

क्रमांक	अपराध षीर्ष	वर्ष–2022(01जनवरी से 31 दिसंबर तक)	वर्ष–2023(01जनवरी से 31 दिसंबर तक)
01	हत्या	22	21
02	हत्या का प्रयास	09	17
03	आपराधिक मानव वध	01	01
04	बलात्कार	51	61
05	अपहरण	86	93
06	डकैती	0	0
07	डकैती की तैयारी व जमाव	0	0
08	लूट	14	13
09	नकबजनी (01 लाख से ऊपर)	10	18
10	चोरी (01 लाख से ऊपर)	06	07
11	दहेज मृत्यु	01	03
	योग	200	234

श्रोत – (जिला पुलिस कबीरधाम से प्राप्त आंकड़े)

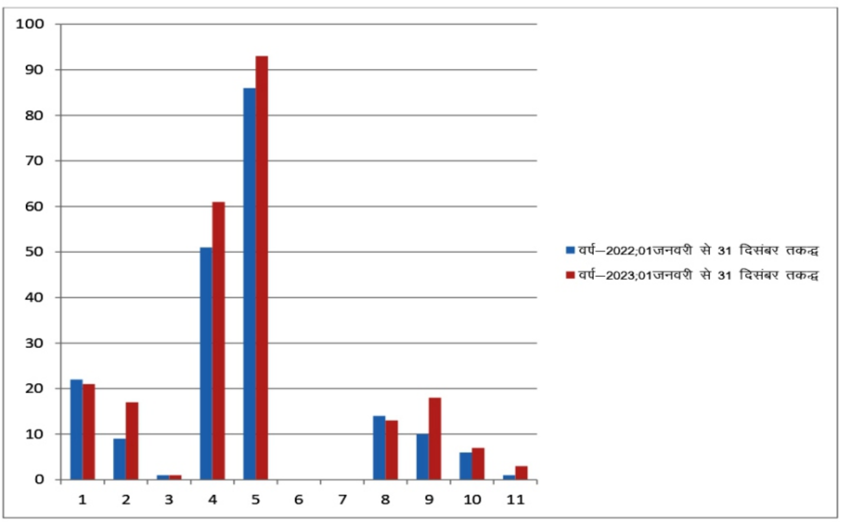

(वर्ष–2022 व 2023 में (01जनवरी से 31 दिसंबर तक)कबीरधाम जिले में पंजीबद्ध अपराधों से संबंधित आंकड़ों का ग्राफ संख्या में)

- .कबीरधाम जिले में पारिवारिक झगड़ों,हत्या एवं आत्महत्या के मामले की जानकारी :–

(दिनांक–01.01.2024 से 17.10.2024)

पारिवारिक झगड़े के कुल मामलों की संख्या [1]	2.हत्या के कुल मामलों की संख्या [2]	3.आत्महत्या के कुल मामलों की संख्या [3]
170	27	118

श्रोत – (जिला पुलिस कबीरधाम से प्राप्त आंकड़े)

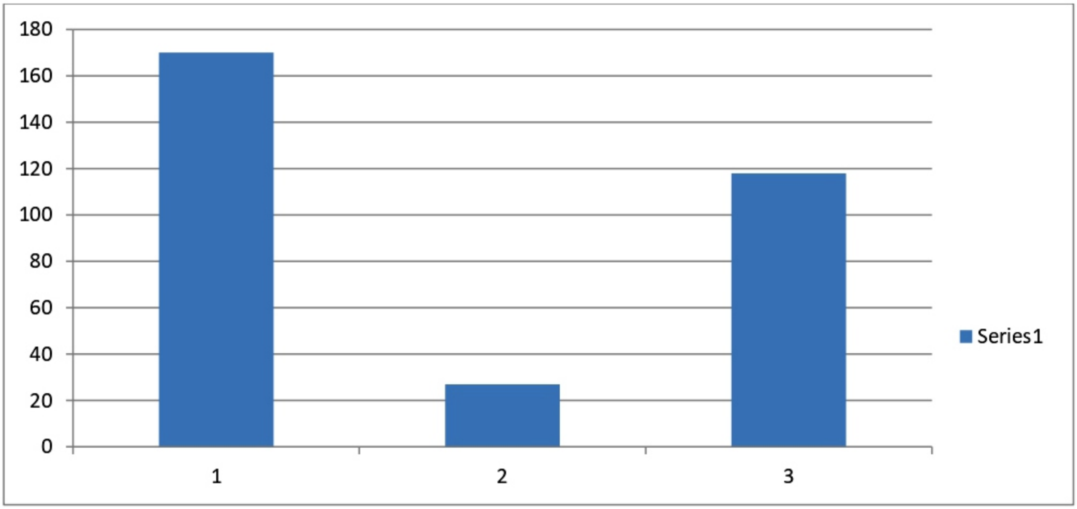

(दिनांक–01.01.2024 से 17.10.2024 तक कबीरधाम जिले में पारिवारिक झगड़ों [1] हत्या [2] एवं आत्महत्या [3] के मामले का ग्राफ संख्या में)

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोधपत्र मे शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले में नातेदारी व्यवस्था मे क्या बदलाव आये को जानने का प्रयास किया है शोधार्थी ने अपने अध्ययन मे निम्न निष्कर्ष निकाले –––––

- विवाहेत्तर यौन संबंध के पश्चात् पारिवारिक तनाव पारिवारिक हिंसा मे बदलने कि पूरी संभावना होती है ।
- किसी भी प्रकार के नशाखोरी से ‸ पारिवारिक तनाव, पारिवारिक हिंसा मे कब बदल जाये यह कहा नही जा सकता ।
- तमाम प्रयास के बाद भी ग्रामीण समाज मे आज भी दहेज कि लालच विद्यमान है ।
- सामांजस्य का अभाव भी परिवार मे कभी भी हिंसा का रूप ले सकती है ।

सुझाव:– प्रस्तुत शोधपत्र मे शोधार्थी द्वारा निम्न सुझाव प्रस्तुत किये गये––

- पारिवारिक जीवन मे विवाहेत्तर यौन संबंध से बचना चाहिए ।
- व्यक्ति को किसी भी प्रकार के नशाखोरी से बचना चाहिए ।
- दहेज एक सामाजिक अभिशाप है इसके विरूद्ध जनजागरूकता लाने की जरूरत है ।
- पारिवार एवं रिश्तेदार मे आपसी सामंजस्य होना चाहिए ।

– मुकेश कुमार कामले[1]
सहायक प्राध्यापक, शोधार्थी (समाजशास्त्र)
शा.दू.ब. स्वशासी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.) मोबा.7999831651

– डॉ. प्रीति शर्मा
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र)
शा. दू.ब. स्वशासी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संदर्भ :

- .सुकृष्ण,विवेक (2019) परिवार का बदलता स्वरूप समस्याएं : एवं चुनौतियां प्रकापित शोध पेपर शोध मंथन 2019 ISSN(P) -0976-5255 pp 233-240
- .कुमारी,सुमन (2020)संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रकृति प्रकाशित शोध पेपर International journal of political science and governance 2020,2(2), E-ISSN 2664-603 P -2664-6021 PP 94-98
- पाठक,डॉ दीपा (2021)कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक जीवन में समायोजन एवं तनाव का तुलनात्मक अध्ययन प्रकाशित शोध पेपर International journal of education 2021 volume 3 ISSN(P) 2231-3613 pp 108-111
- .पाल,मौसमी (2023)कामकाजी महिलाएं और तनाव प्रबंधन प्रकाशित शोध पेपर International journal of applied research 2023 ISSN(P) -2394-7500 PP 207-210
- .रेखा (2024) भारतीय कामकाजी महिलाओं के जीवन में तनाव ,कारण एवं उपाय प्रकाशित शोध पेपर International journal for research trends and innovation 2024 volume 9 ISSN 2456-3315 pp 442-451
- **संदर्भ ग्रंथ सूची :–**
  - आहूजा,राम भारतीय समाजिक व्यवस्था 2013
  - हसनैन,नदीम समकालीन भारतीय समाज 2011
  - मुखर्जी,रवींद्रनाथ सामाजिक समस्याएं 2017
  - पाण्डेय, तेजस्कर व बालेश्वर समाज कल्याण प्रशासन 2022
  - नवभारत छत्तीसगढ़,उड़ीसा दैनिक पत्रिका 23/09/2024 कवर्धा,राजनांदगांव एडीसन
  - नवभारत छत्तीसगढ़,उड़ीसा दैनिक पत्रिका 20/10/2024 कवर्धा,राजनांदगांव एडीसन

प्रगतिवादी विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति : अग्निबीज

– डॉ. सचिन कदम

स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रेमचंद और प्रगतिशील आंदोलन ने साहित्यकारों को प्रभावित किया। मार्क्सवादी या प्रगतिवादी विचारधारा साहित्य की प्रमुख पहचान बन गई थी। आजादी के बाद पूरा देश आशा–निराशा तथा मोहभंग की स्थिति में था। समाज में कई समस्या निर्माण हुई थी। वर्तमान सरकार भी साम्राज्यवादी विचारों से चल रही थी। हिंदू–मुस्लिम बंटवारे ने देश को लहू–लुहान कर दिया था। विकास के नाम पर योजनाओं पर योजनाएं बन गई पर वास्तविकता में वह एक मृगजल ही था। यही वजह थी कि मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव अधिक गहरा होने लगा था। मार्क्सवादी विचारों से साम्राज्यवाद नष्ट किए बिना देश का विकास नहीं हो सकता। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में ''देश की वर्तमान समस्याएं विकास की पूंजीवादी राह पर चलने का परिणाम है। विकास की यह राह साम्राज्यवादी दबाव से कभी पूरी तरह मुक्त नहीं थी। उसमें सामंती अवशेषों के रूप में जो रुकावटें थी, उन्हें कभी दूर नहीं किया गया। स्वाधीनता आंदोलन के साम्राज्य विरोधी कार्य पूरे किए बिना यह देश अपना स्वतंत्र विकास नहीं कर सकता। ये कार्य वामपक्ष को पूरे करने हैं। यह वामपक्ष की ऐतिहासिक आवश्यकता है।"[1]

मार्कण्डेय भी इन्हीं विचारों से प्रभावित थे। प्रेमचंद की दर्शायी गयी राह को उन्होंने अपनाया है। प्रगतिवादी धारा में मार्कण्डेय भी एक सशक्त कथाकार के रूप में सामने आते हैं। प्रेमचंद की तरह उनकी कथाओं का प्रमुख आधार ग्रामीण जीवन रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय गांवों में भूख, गरीबी, शोषण और अभावग्रस्तता निर्माण हुई थी। सरकारी यंत्रणा की पूंजीवादी ताने लोगों में निराशा का माहौल निर्माण हुआ था। बँटवारा और राजनीति ने लोगों में असंतोष भर दिया था। भूख– गरीबी ने उन्हें जुल्म सहने के लिए मजबूर कर दिया था। नारियों की स्थिति तो अत्यंत

दयनीय बन गई थी। इन सभी के कारण लोगों में एक अंर्तद्वंद्व ही निर्माण हुआ। लोग गांधीवादी और मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित थे। नई पीढ़ी परिवर्तन के लिए संघर्ष करने लगी थी। इन सभी का मर्मस्पर्शी चित्रण 'अग्निबीज' में हुआ है। मार्कण्डेय ने समकालीन स्थितियों का चित्रण प्रेमचंद की तरह यथार्थवादी धरातल पर ही किया है।

मार्कण्डेय एक यथार्थवादी रचनाकार है। जिनका ग्रामीण जीवन से संबंध है। ग्रामीण जीवन को वे एक नई चेतना के साथ परिवर्तित करना चाहते हैं। यहां उनकी दृष्टि मानव कल्याण की ही रही है। यह उनकी दृष्टि उनके अंदर को लोकमंगल की भावना को ही स्पष्ट करती है। उपन्यास में उनकी राजनीतिक चेतना अधिक प्रखर रही है। बचपन से ही उनका संबंध इन विचारों से रहा है। उनकी यह चेतना मार्क्सवादी विचारों से अनुप्रणित है। समग्रतः उनके चिंतन में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विषमता को मिटाकर और शोषित वर्ग को वर्ग की शोषण कर वर्गविहीन समाज व्यवस्था के निर्माण की ही कामना करते हैं। मार्कण्डेय के चिंतन में मानवतावादी दृष्टि ही महत्वपूर्ण है। साहित्य स्वान्त सुखाय न होकर बहुजन हिताय की कल्पना वे करते हैं। वे कला जीवन के लिए इस सिद्धांत के ही पोषक है। यही कारण है कि उपन्यास की मूल संवेदना में भी मानवतावादी विचार है।

मार्कण्डेय ने विभिन्न समस्याओं एवं प्रश्नों को पूरी गंभीरता के साथ उठाया है। 'अग्निबीज' की कथावस्तु में व्यक्ति और समाज, पारिवारिक समस्याएं, नारी समस्याएं, विवाह एवं दहेज, जातियता, सांप्रदायिकता, सामाजिक विघटन तथा नैतिक मूल्यों का विघटन आदि समस्याएं एवं प्रश्नों को समेटने का प्रयास किया गया है। मार्कण्डेय की प्रगतिशील दृष्टि इस तथ्य पर प्रकाश डालती हैं कि मौजूदा समाज व्यवस्था ही आज के तमाम समस्याओं की जड़ है। मार्कण्डेय की यह सामाजिक संवेदना नारी समस्याओं से जुड़ी विवाह और दहेज की समस्याओं को उजागर करती है। निम्न तथा मध्य वर्ग के सामने यह समस्याएं मानो एक प्रश्नचिह्न है। परिवार को हर समय लड़की की चिंता लगी रहती है। लड़की के लालन– पालन के साथ शादी और दहेज से परिवार चिंता ग्रस्त होता है। निम्न वर्ग में तो इससे बचने के लिए बाल विवाह की प्रथा को बढ़ावा देता है। मार्कण्डेय के प्रतिनिधि पात्र हरगोन सिंह और श्यामा इन समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं। हरगोन सिंह के सामने ही बेटी के दहेज और रिश्ते की चिंता है। वे कहते भी है कि "ठाकुरों में बड़े लड़के कहां मिलेंगे और मिलेंगे भी तो दहेज के लिए इतने रुपए कहां से आएंगे।"[2] श्यामा नारी समस्याओं से अधिक चिंतित है। जैसे –ः लड़की राकस की जात है और बारह बरस बीता नहीं की परिवार के सीने पर पत्थर की तरफ भार बन जाती है। मां की आंखों में आंसुओं से माड़ा पड़ने लगता है। बाप दर–दर की ठोकर खाता है। दहेज के लिए कर्ज लेता है, जमीन बेचता है। कोई खाली हाथ लड़की को घर में लेगा भी क्यों? क्या होती है लड़की एक नहीं तो दूसरी मिलेगी।"[3] मार्कण्डेय समाज की इस धारणा में ही परिवर्तन चाहते हैं।

मार्कण्डेय धर्म और ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते। उनके अनुसार धर्म और ईश्वर के प्रति मनुष्य का विश्वास जब संकीर्ण रूप धारण कर लेता है तब सांप्रदायिकता की भावना का विकास होता है। अतः देश में धर्म और जातिगत विविधता होने के कारण सांप्रदायिकता की भावना एक गंभीर समस्या बन गई है। इन समस्याओं ने भारतीय समाज को खोखला बनाया है। आज वर्तमान स्थिति में भी संकीर्णतावाद, अंधविश्वास और मिथ्या धारणाएं मौजूद है। इनमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। स्वयं मार्कण्डेय भी सुधारवादी संघर्ष की विफलता से परिचित है । 'अग्निबीज' में मार्कण्डेय ने लिखा है "धार्मिक– अंधविश्वासों और रुढ़ियों के खिलाफ कितने ही सुधारवादी संघर्ष हुए, लेकिन उनसे क्या संस्थाएं बदली? स्त्रियों की सामाजिक आर्थिक हालत में कोई फर्क आया? वे आज भी पूरी तरह गुलामी का जीवन नहीं जी रही है? जात–पात टूटी?"[4] मार्कण्डेय प्रगतिवादी विचारों के संवाहक होने के कारण समाज

की संकीर्णता और सांप्रदायिकता का विरोध करते हैं।

"मार्कण्डेय की दृष्टि में वर्तमान शासन की पूंजीवादी राजनीति में शोषित समाज की स्थिति अधिक दयनीय बनाई है। इसलिए वे पूंजीवाद और उसका समर्थन करनेवाली शासन को जड़ से उखाड़ कर रखना चाहते हैं। वे वर्गविहीन समाज व्यवस्था का निर्माण चाहते हैं। उपन्यासकार वर्तमान सरकार की भी कटू आलोचना करते हैं। क्योंकि वर्तमान सरकार पूंजीवादियों का ही साथ दे रही थी। कहने को योजनाओं पर योजनाएं बन रही थी। किंतु घूमा–फिरा कर इन योजनाओं का धन पूंजीवादियों के झोले में ही जा रहा था। मार्कण्डेय कहते हैं – "पूंजीपतियों और जमीदारों के प्रभाव में चलने वाली इस सरकार से यह सारी उम्मीदे नहीं करनी चाहिए। पूंजीवादी व्यवस्था का आधार ही शोषण है। इसलिए शोषण को कायम रखने में जो भी चीजे सहायक है, कांग्रेस सरकार उन्हें कभी नहीं छोड़ सकती। कौन इतना बेवकूफ होगा जो अपनी जड़ पर कुल्हाड़ी मारेगा? आधार ही बदल जाएगा तो ऐसी सरकार टिकेगी कहाँ?"[5]

मार्कण्डेय की दृष्टि में सामाजिक जीवन से संबंधित समस्याओं के मूल में अर्थ ही है। समकालीन तथा वर्तमान समाज का श्रमजीवी वर्ग अभावग्रस्तता में ही जीवन यापन कर रहा है। इसके पीछे आज की पूंजीवादी व्यवस्था और उनकी नीतियां ही है। इसी कारण आज आर्थिक विषमता ने व्यापक रूप धारण कर लिया है। प्रस्तुत उपन्यास में बाकर और मुसई महतो का जीवन भूख, गरीबी और शोषण से ही पीड़ित है। उपन्यासकार ने हरगोन सिंह के माध्यम से पूंजीवादी शासन पर ही प्रहार करते हैं। वह कहते हैं – ''ग्राम समाज की सहायता और स्वावलंबन को वापस करने के लिए पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का परित्याग आवश्यक है। जो वर्तमान शासकों की शक्ति और सामर्थ्य से बाहर जा चुका है। अब यह कार्य सर्वहारा के व्यापक और क्रांतिकारी संगठन द्वारा ही संभव है।''[6]

मार्कण्डेय धर्म और ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते। उनके विचारों से धर्म के कारण ही सांप्रदायिकता निर्माण हुई। 'अग्निबीज' का बाकर इसी सांप्रदायिकता का शिकार बना है। आजादी और विघटन में हिंदू–मुस्लिम द्वेष निर्माण हुआ। परिणामतः सामान्य लोग इस पीड़ा से ग्रस्त हुए थे। अग्निबीज के बाकर का कथन इस संदर्भ में उचित लगता है–"देश हिंदू मुसलमान में बट गया था। लोग खून खराबी की बातें रोज ही करते।. .....वाह रे आजादी ! मिली भी तो आदमी को नहीं, हिंदू–मुसलमान को मिली।"[7]

समग्रतः कहा जा सकता है कि मार्कण्डेय प्रगतिशील साहित्यकार है। जिन्होंने 'अग्निबीज' के माध्यम से हमें नई चेतना प्रदान की है। स्वतंत्र भारत के विकास के लिए पूंजीवाद मिटाकर पूंजीवादी शासन को उखाड़ कर सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकार की स्थापना करना। प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक विषमता तथा समस्याओं को जड़ से मिटाकर वर्गविहीन समाज निर्माण की आकांक्षा व्यक्त की गई हैं। यह उपन्यास मानवतावादी विचारों से प्रेरित है।

संप्रति : सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, संगमनेर नगरपालिका कला, दा. ज. मालपाणी वाणिज्य एवं ब. ना, सारडा विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त) संगमनेर जिला – अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)–422605

मोबा. – 9404051942

संदर्भ :

1. मार्क्सवाद और प्रगतीशील साहित्य डॉ. रामविलास शर्मा, पृष्ठ – 373
2. अग्निबीज – मार्कण्डेय, पृष्ठ – 123
3. वहीं – पृष्ठ – 108
4. वहीं – पृष्ठ – 159
5. वहीं पृष्ठ – 151
6. वहीं मार्कण्डेय, पृष्ठ – 125
7. वहीं – मार्कण्डेय, पृष्ठ – 139

Exploring Mediating role of Economic Growth in the relationship between Social Sector Expenditure and Tax Revenue in Karnataka

- **Hemantha M**, Research Scholar
- **Dr. S.B. Nari**, Associate Professor

1. Introduction

In developing economies, Economic Growth not only acts an indicator of prosperity, but it is also acts as a facilitator for social progress. Understanding the relationship between public spending, particularly in the Social Sector, and Tax Revenue is significant in determining effective fiscal policies. In India, state-level distinctions in economic policies and their impact offer a unique opportunity to explore the mutuality between Social Sector Spending and Tax Revenue. Despite increased public spending on health, education, and welfare, many states struggle to generate adequate Tax Revenues, impacting their ability to sustain these spendings. While considerable research has been done on the direct impacts of Social Sector Spending and Tax Revenue on Economic Growth, the mediating role of Economic Growth within this relationship remains less explored, particularly at the state level in India. The present analysis aims to investigate whether Economic Growth mediates the relationship between Social Sector Expenditure and Tax Revenue in Karnataka. The objectives include quantifying the magnitude of this mediation and identifying the mechanisms through which Economic Growth influences this relationship. Understanding this mediation can provide valuable insights for policy-makers on how to shape social sector spending and tax policies to maximize Economic Growth and fiscal sustainability.

2. Research Methodology

The paper examines the role of Economic Growth between the relationship of Social Sector Expenditure and Tax Revenue in Karnataka as a Mediator. The study employs a lag specification of 1, 2, and 1 years for Economic Growth, Social Sector Expenditure and Tax Revenue respectively, based on Akaike (AIC) and Schwarz Information Criterion (SIC). The Mediation Analysis is conducted with the help of IBM SPSS 25.0 and PROCESS Macro Model 4 Developed by

Preacher and Hayes (2013). The Data required for the analysis has been retrieved from State Finances: A Study of Budgets from Reserve Bank of India (RBI), Economic & Political Weekly Research Foundation India Times Series (EPWRFITS) online database and Global Data Lab.

The Next Section presents the Analysis, Implications of Findings and suggests avenues for further research.

3. Data Analysis and Implications of Findings

3.1. Descriptive Statistics

Table 3.1 :

	LNSSE	LNTR	LNNSDP
Mean	14.06013	14.47902	11.17540
Median	13.91634	14.54960	11.13412
Maximum	15.95868	16.22694	12.03202
Minimum	11.95538	12.35970	10.38613
Std. Dev.	1.261555	1.236963	0.498982
Skewness	0.029465	-0.089972	0.173224
Kurtosis	1.704976	1.655545	1.809530
Jarque-Bera	2.240746	2.453253	2.049660
Probability	0.326158	0.293280	0.358858
Sum	449.9242	463.3285	357.6127
Sum Sq. Dev	49.33716	47.43238	7.718482
Observations	32	32	32

The Table 3.1. elucidates the Socio-economic performance of Karnataka using Social Sector Expenditure, Own Tax Revenue, and Net State Domestic Product during 1990 to 2021. The assessment of these variables reveals a stable economic performance in Karnataka, characterized by consistent growth and development. The log of Social Sector Expenditure (LNSSE) and own Tax Revenue (LNTR) exhibit balanced growth, suggesting stability in public spending and revenue generation. In contrast, the log of net state domestic product, which reflects Economic Growth, shows a denser distribution with lower variability, highlighting a steady economic performance. The Jarque-Bera statistical tests verify the normal distributions, further supporting the reliability of using these variables for mediation analysis. This depicts a stable Economic Growth and development efforts over the study period.

3.2. Descriptive Statistics

Table 3.2 :

	LNSSE	LNTR	LNNSDP
LNSSE	1.000000	0.996138	0.995359
LNTR	0.996138	1.000000	0.988548
LNNSDP	0.995359	0.988548	1.000000

The correlation matrix of Social Sector Spending, Own Tax Revenue and Net State Domestic Product for Karnataka from 1990 to 2021 reveals a significant relationship between the variables (Table 3.2). The extremely high correlation coefficients suggest a strong positive association between these variables, indicating that fiscal and social policies in Karnataka have been integrated and mutually reinforcing. This relationship underscores the critical role of effective fiscal management and strategic investment in the social sector as key drivers of economic and human development in the state.

3.3. Mediation Analysis

3.3.1. Direct Effect of Social Sector Expenditure on Tax Revenue

Effect	se	t	p	LLCI	ULCI
.9412	.2306	4.0814	.0004	.4680	1.4143

The Table 3.3.1. revealed a significant direct effect of Social Sector Expenditure on Tax Revenue in Karnataka. The unstandardized regression coefficient for this direct effect was 0.9412, with a standard error of 0.2306. The t-statistic was 4.0814, and the associated p-value was 0.0004, indicating that the direct effect is statistically significant at the 0.05 level. The 95% confidence interval for this effect ranged from 0.4680 to 1.4143, further confirming the significance of the direct relationship. The results indicate that increasing public spending in the social sector, particularly in areas such as health and education, can lead to higher Tax Revenues for the state government. the present study contributes to the literature on the relationship between Social Sector Expenditure and Tax Revenue in the Indian context.

3.3.2. Indirect Effect of Social Sector Expenditure on Tax Revenue (through Economic Growth)

	Effect	BootSE	BootLLCI	BootULCI
lnPCNSDP	.0236	.2549	-,4874	.5167

This Table 3.3.2. examines the indirect effect of Social Sector Expenditure on Tax Revenue in the state of Karnataka, India, through the channel of Economic Growth.

The analysis suggests that while Social Sector Expenditure has a direct, statistically significant impact on Tax Revenue, the indirect effect through Economic Growth is not found to be significant. The unstandardized indirect effect was 0.0236, with a bootstrap standard error of 0.2549. The 95% bootstrap confidence interval ranged from -0.4874 to 0.5167, indicating that the indirect effect is not statistically different from zero.

The insignificant indirect effect suggests that the path through which Social Sector Expenditure Influences. Tax Revenue in Karnataka is through a direct impact, rather than via Economic Growth. This emphasises the need for policymakers to carefully design and target social sector programs to maximize their Tax Revenue. Future research could explore the relationships across different components of Social Sector Expenditure and analyse its relationship between Economic Growth, and Tax Revenues.

- **Hemantha M,** Research Scholar,
Department of Studies in Economics,
Karnatak University, Dharwad, Mob. 8971815673

- **Dr. S.B. Nari,** Associate Professor,
Department of Studies in Economics,
Karnatak University, Dharwad

References

Anand, S., & Sen, A. (2000). Human development and economic sustainability. World development, 28(12), 2029-2049.

Arvin, M B., Pradhan, R P., & Nair, M. (2021, June 1). Are there links between institutional quality, government expenditure, Tax Revenue and Economic Growth? Evidence from low-income and lower middle-income countries. Elsevier BV, 70, 468-489.

Bishnoi, A., & Sheera, V P. (2017, January 1). Public spending and Economic Growth for Indian states. Inderscience Publishers, 3(3), 250-250.

Chakraborty, L. (2003). Public Expenditure and Human Development: An empirical investigation. Paper Presented at Wider International Conference on Inequality, Poverty and Human Well-Being, Helsinki, 30-31 May.

Das, R C., Mandal, C., & Patra, A K. (2019, October 3). Linkage between social sector's spending and HDI: study on individual as well as panel data of Indian states. Routledge, 79(2), 357-379.

Edame, G E., & Okoi, W W. (2014, July 1). The Impact of Taxation on Investment and Economic Development in Nigeria. Richtmann Publishing.

Gaur, M., & Kant, R. (2020, October 5). The Role of Government and Governance in Human Development: A Study of very High Development Economies. , 5(5).

Haq, M. (1995). The Advent of the Human Development Report, Chapter 3 from Reflections on Human Development, Oxford University Press.

Hayes, A. F. (2013). Introduction to mediation, moderation, and conditional process analysis, New York: The Guilford Press.

https://epwrfits.in/index.aspx

https://m.rbi.org.in/Scripts/AnnualPublications.aspx?head=State%20Finances%20:%20A%20Study%20of%20Budgets

https://globaldatalab.org/shdi/table/shdi/IND/

Isnowati, S., Setiawan, M B., Basukianto., & Wardjono. (2020, January 1). Investment and Government Expenditure and Investment Economic Growth in Central Java, Indonesia. Atlantis Press.

Khusaini, M. (2016, January 1). The role of public sector expenditure on local economic development. Inderscience Publishers, 9(2), 182-182.

Maiga, S., & Xu, F. (2017, September 1). The growth of government annual budget through taxes collection. IOP Publishing, 231, 012049-012049.

Mundra, S S., & Singh, M. (2017, January 1). Inter-linkages between human development and Economic Growth: a sustainable development analysis across Indian states. , 15(2), 183-183.

Sharma, N., Srivastava, D. A., & Khanna, D. S. Does Economic Growth Act as A Mediator Between Government Spending and Human Development? An Insight from Northeastern India. International Journal of Development and Conflict, 13(2023) 1–16

A Metaphysical Study of the Garhwal Himalaya within the Yogic Context

- **Mayank Uniyal**, Research Scholar

Abstract - Himalaya is known as the King of the Mountains in this universe. Besides its mighty geography, Himalaya is also known as a revered and holy place for its spiritual value. The roots of these prodigious peaks are often observed to be associated with spirituality. The ranges serve as an abode of many religious and spiritual practitioner since the mythological age to the medieval one. Even in the 21st century, saints, monks, and many religious practitioners still aim at unveiling and attaining the spirituality that is concealed in the shade of these mighty mountains. Naturally, the question arises about the selection the of the place: Why Himalayas? Moreover, what is the spiritual association of the

place? This research work is positioned towards answering the a forementioned questions. Concurrently, it shall also attempt an analysis and exploration of the role and the spiritual significance of Himalayas within the yogic context.

Key Words - Metaphysics, Spirituality, Himalaya, Sadhana, Holistic, Kaivalya, Yoga, Spiritual Energy, Circumbulate.

Introduction – Philosophy uses the term "metaphysical literary" to refer to literature that deals with abstract ideas or subjects like existence or truth & yoga and spirituality are both there. Yoga is not just doing physical exercise and different breathing pattens. Bhagwad Gita says, "Yoga is the journey of the self, through the self, to the self." Sanskrit word "Yuj", meaning "join" or "unite," is where the word "yoga" comes from. As, a result, yoga is a practice or journey that integrates Body, Mind, and Soul. Maharishi Vyas defines yoga as a "Samadhi", or the Ultimate State. Maharishi Patanjali says that "Yoga shchittavrittinirodhah" means that yoga stops the mind-stuff (Chitta) from taking various forms (Vrittis). "Samatvam Yoga Uchyate", Lord Krishna says in Srimad Bhagwad Gita, means yoga is a balanced state of body, mind, and emotions. When Lord Krishna says in the fiftieth versus of the same chapter, he says, "Yoga Karmasu Kauśhalam", which means doing your duties without attachment as a skill. He also says that selfish work has bad effects on us, so work with zeal to serve. Do selfless obligation.

Great Himalaya, Central Himalaya and Shivalik Himalaya are 3 different Himalayan ranges. At the banks of these rivers, for many years, millions of people and species have been living and flourishing, gaining physical, financial, and spiritual benefits. It has always been the top of divinity for different reasons. From myth to modern times, thousands of saints, monks, religious leaders, even gods, goddesses, and deities have visited the Himalayan region to find peace, enlightenment, and salvation. The spiritual aspect of the Himalaya will be discussed in the first part of this paper. Next, we will look into its yogic origins in the second section.

Spiritual Relevance of Garhwal Himalaya :- The Himalaya is the pinnacle of spirituality as well. Remembering these needs is necessary for attaining Kaivalya and experiencing spirituality. If I limited my discussion to Uttarakhand, there are numerous geographical, mythical, and spiritual

grounds for acknowledging it as Devbhoomi (God's Home). According to the Ramayana by Maharishi Valmiki, Hanuman travelled to the Himalayas to bring Sanjivani Booti, a type of herb or medicine that could only be found there, to Lakshman after Meghnada injured him during the battle between Rama and Ravana's armies.

Mount Kailash, the home of Lord Shiva, is an entrance to the Amarnath Yatra and features an om symbol atop it. Nanda Devi Raj Jaat, a spiritual journey, is also associated with Mount Nanda Devi. The five well-known temples of Lord Vishnu are referred to as Panch Badri. Panch Kedar, five Temples of Lord Shiva are also located in this region. Along with Panch Prayag i.e., Vishnuprayag, Nandaprayag, Karan-prayag, Rudraprayag, and Devprayag, famous pilgrimage of Hinduism Char Dhama Badrinath, Kedarnath, Gangotri, Yamunotri is here in this Himalayan belt. The locations of the Triyugi Narayan Temple (wedding venue of Lord Shiva & Goddess Parvati), the Gangotri Glacier's terminus, Gomukh, Siddha Peeth (Power Seat similar to Dhari Devi), and the source of the Bhagirathi River are all noteworthy. 33 crore gods are believed to reside at Patal Bhuvaneshwar, a group of caves that Aadi Guru Shankaracharya visited.

Yogic reputation of Garhwal Himalaya :– Yoga is an age-old way of life that also requires a pleasant vibe, energy, and surroundings. In order to pursue his spirituality, Goswami Tulsidas relocated to the Garhwal Himalaya from his house. 'Control over Senses', or Pratyahara, is a yogic word that is highly important to Rishikesh (Lord of Senses). Here in Rishikesh, Mahesh Yogi, who is renowned around the globe for **AVATEET DHYANA,** selected Chaurasi Kutiya (84 Kutiya) for meditation. In order to continue his spiritual path, Swami Sivananda Saraswati built the Sivananda Ashram in Rishikesh. The Ganges or other Himalayan regions were chosen by Swami Satyananda, Swami Sahajananda, Swami Omkarananda, and many others to comprehend the essence of spirituality.

Under the Himalayan canopy is Haridwar (Hari ka Dwar, or the Door of Salvation), Joshimath, also called Jyotirmath and founded by Adi Shankaracharya. Neem Karoli Baba found salvation at Kainchi Dham, in the Kumaon Himalaya. Almora is a site where Swami Vivekananda, Satyanand Saraswati, Mahatma Gandhi, and Tagore,

among others, outbid their spiritual and yogic practice. It is encircled by three deities, Kasar Devi, Syahidevi, and Banaridevi. The same town is home to Vivekananda Kutir, a cottage where Vivekananda experienced spiritual enlightenment. Approximately 1.5 miles separates Chandrashila, the spot where Lord Ram meditated following his victory over Ravana, from Tungnath, the tallest Shiva temple in Asia. The Srimad Bhagwad Gita states that the Pandavas selected Swargarohini, which literally translates as "staircase to heaven," as their penance following their triumph over the Kaurayas. In addition to its Atri muni ashram, which was visited by Lord Rama, Sita, and Laxman during their banishment, this place is home to Vyas Cave, Sage Vyas' hermitage and writing retreat. Sage Vyas is said to have penned the four Vedas within this cave.

Relation between Yoga, Spirituality & Himalaya :-. Indian culture has always been deeply rooted in spirituality. It is an integral feature of all civilizations. Justice C.K. Prasad claims that yoga has been crucial to the development and survival of Indian spirituality. Hegel, a philosopher from the West, defined spirit as the universe's rational, divine soul. It presents the world of tangible objects and limited (individual) souls as components of its evolution. The Vedic literature is the source of Indian thinking that emphasizes the global soul. Indian philosophy also talked about how yoga-based literature and the Vedas essentially center on the idea of the world soul. Sankhya Darshan is primarily spoken on 25 aspects. Two facets of Sankhya Yoga are Purush (awareness) and Prakriti (the wellspring of the material world). Purush is the masculine force that supplies the universe's enlivening seed, while Prakriti is the female force that provides the body. The ultimate reality is expressed in the universe.

Conclusion - The information listed above demonstrates that Uttarakhand is a true haven for yoga and spiritual practitioners. For many reasons, this place is simply God's residence, which is why a great number of saints and spiritual leaders have wished to practice here throughout history.

- Mayank Uniyal
Research Scholar,
Sparsh Himalaya University
Dehradun, (Uttarakhand)
Mob - 7417023990

References :

1. Saraswati Swami Satyananda; Four Chapters of Freedom, Yoga Publication trust, Munger, Bihar, 2013.
2. Goyandaka Harikrishna Das; Srimad Bhagavadgita, Gita Press, Gorakhpur, 2013.
3. (Ed.) Rawat Nawani; Winsar Uttarakhand Year Book 2022, Winsar Publishing Co., 2022.
4. Negi, Chandra Singh; In the Garb of Nanda Devi Raj Jaat, Winsar Publication, 2013.
5. Sharma Devidatta; Cultural History of Uttarakhand (Indira Gandhi National Centre for the Arts), D.K. Print World Ltd, 2009.
6. Uniyal Hema; Kedarkhand, Takshashila Prakashan, 2011.
7. Uniyal Hema; Maanaskhand, Uttara Books, Winsar, 2014.
8. Baluni, Dr. Dinesh Chandra; Janpad Almora, Winsar Publication, 2012.
9. Thapliyal Digamber Dutt; Himalaya Darshan - In the Pilgrimage of Inside, Winsar Publication, 2011.
10. Bond Ruskin; Himalaya: Adventures, Meditations, Life, Speaking Tiger Books LLP, 2020.
11. Bharadwaj, S.M.; Hindi Places of Pilgrimage in India, Thompson press Ltd., New Delhi, 1973.
12. Kaur, J.; Himalayan Pilgrimages and the New Toursim, Himalayan Books, New Delhi, 1985.

कथा वाचक की अनुगूँजें

– श्यौराज सिंह बेचौन

विगत माह इटावा के दादरपुर गांव में मुकुट मणि यादव और किशन सिंह यादव द्वारा भागवताचार्य के रूप में कथा वाचन करने के दण्ड स्वरूप मुकुट मणि यादव की चोटी काटी गई गांव गैर यादव ग्रामीणों के पैर छुआए गए सोशल मीडिया पर कथा प्रकरण की अनुगूंजें थमने का नाम नहीं ले रही हैं।

भारतीय समाज में पेशों को लेकर कोई स्वतंत्रता मूलक व्यवस्था व्यवहृत नहीं हो सकी है। कथा, व्यथा के पीछे राजतंत्र की सामाजिक जड़ता बड़ी समस्या है। स्वभाव और संस्कारों में समय सापेक्ष गत्यात्मकता नहीं है। नगरीय जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन ठहर सा गया है। यद्यपि संविधान ने पेशे की पाबंदियों से नागरिकों को आजाद कर दिया है। सेवा संस्कार किसी जाति की बपौती नहीं हैं, कोई भी पेशा योग्यता और क्षमता के अधीन है तदनुसार किसी भी नागरिक को कोई भी पेशा अपनाने की स्वतंत्रता है।

वंशानुगत आधार मानकर एक बार महात्मा गांधी ने परामर्श दिया था कि व्यक्ति को माता–पिता के पैतृक पेशे को अपनाना चाहिए। इससे उसे विरासत के अनुभव का लाभ मिलेगा। परंतु डॉ. बी. आर. अम्बेडकर को लगा, पेशों के भेद–भाव के साथ जाति भेदभाव की जड़े भी पुष्ट होती रहेंगीं, और स्वतंत्रता सापेक्ष समतामूलक समाज निर्माण का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। उन्होंने गांधी जी से संवाद किया और पूछा कि, यदि कोई स्त्री दुर्भाग्य से वैश्यावृति की गिरफ्त में आ गई है, तो क्या उसकी बेटी को भी मां के पेशे में जाना जरूरी है?

कथा–वाचन का पेशा परंपरा से एक जाति विशेष तक सीमित होने के कारण उत्तर प्रदेश के इटावा क्षेत्र में दो यादवों द्वारा कथा वाचन करने पर कथा वाचक ब्राह्मणों गैर–यादव व उनके समर्थकों ने गंभीर एतराज जताया। ऐतराज शाब्दिक रहा होता तो व्यथा का सबब नहीं बनता। परंतु आरोपी ने तो पीड़ित का सिर घुटा देने पेशाब के छिड़काव करके उसे शुद्ध करने जैसे कृत्य आपत्तिजनक थे।

कथा वाचकों को लगा यह उनका पेशे का उनका एकाधिकार उनसे छीना जा रहा है। इससे होने वाली आय पर खासकर उनका ध्यान है। पेशों की पेंचीदगी सामंती युग

की याद दिलाता है। घटनाएं हमें अतीत में ले जाती हैं। डेढ़ सौ साल पहले जब ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' के तहत शूद्रों के विवाह, कथा आदि पढ़ने के अनुष्ठानों को ब्राह्मणों द्वारा बहिष्कार किए जाने पर पढ़े–लिखे शूद्रों को पंडितायी का पेशा करना आरंभ किया, तो ब्राह्मणों ने ब्रिटिश अधिकारियों से शिकायत की, ''शादी विवाह कथा पूजा शूद्र स्वयं करने लगे हैं, इससे हमें दान दक्षिणा से होने वाली आय समाप्त हो गई है। हमसे पूजा करायें न करायें दान हमें दिलाइये।''

आजादी के 75 साल बाद भी धार्मिक सांस्कृतिक क्रियाकलापों की दृष्टि से समाज वहीं डेढ़ सौ साल पीछे खड़ा है। स्वतंत्रता के समानता मूलक व्यवहार जाति भेद के अभ्यस्त लोग युगीन मूल्यों को आत्मसात ही नहीं कर पा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि शूद्रों के साथ ऐसा होता है। खुद शूद्र दलितों का अपमान करते हैं। 2017 में जब सपा की सरकार थी। दलित उत्पीड़न का ग्राफ बढ़ गया था। राजनैतिक लोकतंत्र सामाजिक लोकतंत्र की जमीन पर उतरने का नाम ही नहीं ले रहा, उल्टा राजतंत्र की आत्मा लौट–लौट कर लोकतंत्र को अपनी गिरफ्त में ले रही है।

प्रस्तुत प्रसंग में भी यादव कथावाचक तो यहां तक कहते है हमारा अपमान इसलिए किया कि उन्होंने हमें दलित (चमार) समझा था। मतलब दलित का अपमान किया जा सकता है शुद्र का नहीं। ऐसा नहीं है कि यादवो को ब्राह्मणों ने नीची जाति (शूद्र) माना है, अपितु यादव भी दलितों का उत्पीड़न करने में आगे रहते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि उपेक्षित, दलित और कथित नीची जातियों की सरकारों ने भी इनकी पहचान की चेतना का विस्तार नहीं किया और ना ही अधिकार बोध का परिचय दिया।

इस घटना से सामाजिक सुधार आंदोलन की अहमियत का पता चलता है। संविधान प्रदत्त व्यक्ति की गरिमा कानूनी दबाव से अमल में स्थाई रूप नहीं पा सकती। व्यक्तियों के स्वाभिमान और संस्कारों में आधुनिक और सभ्य बनाने की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। 'जाति तोड़ो', 'समाज जोड़ो' रोटी बंदी बेटी बंदी जैसे– नारे निर्जीव कैसे हो गए ?

उत्तर प्रदेश में जातियों का यह रूप चिंताजनक इसलिए भी है कि यहां दलितों पिछड़ों की (सपा, बासपा) सरकारें पिछले तीन दशक तक रही हैं। तो जाहिर है राजनीति में उनकी जो भी हैसियत बनती रही हो, सामाजिक नजरिया में वह बदलाव नहीं आया है।

यह एकमात्र घटना नहीं है। अन्य रूपों में भी जाति अपमान की घटनाएं प्रकट हो रही हैं। मसलन जब यह टिप्पणी लिखी जा रही है खबर है 'अनुसूचित जाति के युवक की बारात को दबंगों ने रोका। खबर में अमर सिंह वाल्मीकि ने बताया कि शुक्रवार की रात उनकी बेटी की बारात आई थी। रात में चढ़त हो रही थी। उनका आरोप है कि गांव के ठाकुर समाज के कुछ लोग आकर खड़े हो गए और कहने लगे कि बारात उनकी गली से होकर नहीं जाएगी। इसके चलते हंगामा हो गया। बाद में बारात को पानी (कीचड़) भरे रास्ते से ले जाना पड़ा। सूचना पर पुलिस पहुंची आरोपी पक्ष के एक व्यक्ति को पकड़ कर थाने ले गई। (अमर उजाला 6.7.2025 पृ. 11) ये घटनाएं हमें क्या संदेश दे रही है ?

23 जून को 'दलित की बारात चढ़ने से रोकी', पथराव में सिपाही घायल पचास के खिलाफ केस "दिवंगत प्रेम बाबू की बेटी आरती की शादी हाथरस के रुदायन निवासी विकास से तय हुई थी। 21 जून की रात बारात को क्षत्रिय समाज के लोगों ने चढ़ने से रोक दिया। इस पर हंगामा हो गया। सूचना पर पुलिस पहुंची और हंगामे को देखते हुए आसपास के थानों की पुलिस भी बुला ली इस बीच पथराव कर दिया। एक पत्थर आरक्षी के सिर में लगा, जिससे वह लहूलुहान हो गया। (अमर उजाला 23 जून 2025) इसी तरह शामली के लक्ष्मीपुरा में प्रेम विवाह करने पर युवक को पंचायत में पीटा गया और उसे गांव छोड़ने की धमकी दी। 'सोना' ने बताया उसके बेटे राजबीर ने निकट के गांव बझेडी की लड़की से कोर्ट मैरिज की। पूर्व प्रधान स्वराज के आवास पर हुई पंचायत में 'बेटे' जनेश्वर को जबरदस्ती खींच कर लाया और पिटा गया। (अमर उजाला 13 जून 2025) गांव के हालातों को देख कर सवाल उठता है कि यदि गांव में स्वर्ग है तो किसके लिए ? पंचायती रामराज किस का राज है ?

– श्यौराज सिंह बेचैन

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष व सीनियर प्रोफेसर हैं)

मोबा. 97183 71808

जो ढ़ाल हमारी हुआ करता था।

दुश्मन को भी गले से लगाया करता था

देता था चुनौति आंधी को जो

वह शख़्स "सत्यप्रेमी" हुआ करता था।

बुद्ध, कबीर, फुले का अनुयायी था

अम्बेड़कर-से जीवन को अपनाये था

देता था सन्देश समता-ममता का

वह शख़्स "सत्यप्रेमी" हुआ करता था।

पाते रहे जो मंजिल उनसे अपनी

वे ही किनारे उनको करते गये

रहा हाशिये पर भी जो दृढ़ संकल्पित

वह शख़्स "सत्यप्रेमी" हुआ करता था।

कर्तव्य-पथ जिसको बहुत प्यारा था

न्याय-बंधुता का जो हामी था

उपेक्षा के बदले सम्मान जो देता था

वह शख़्स "सत्यप्रेमी" हुआ करता था।

डॉ॰ तारा परमार

डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी जी
की
इक्कीसवीं पुण्यतिथि
(07/08/25)
पर आश्वस्त परिवार की ओर से
विनम्र श्रद्धांजलि

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार